इकाई – 2

Date :– 23.05.2020

Topic :- गणित में सीखने की योजना : क्यों और कैसे बनाएँ?

(1) सीखने की योजना : कैसे बनाए :–

बच्चे बढ़िया ढंग से तब सीखते हैं जब पाठ को इस ढंग से सावधानी पूर्वक कार्यान्वित किया जाए कि सीखने की क्रिया दिलचस्प बने। ऐसे सवालों से उन्हें सीखने में मदद मिलती है जो उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करें। ऐसे सवालों के अलावा ऐसी सामग्री और गतिविधियों का इस्तेमाल उपयोगी होता है जिनसे विचार विकसित हो और अभ्यास का मौका मिले। दूसरी ओर शिक्षकों को कक्षा की सच्चाइयों का भी सामना करना होता है। इन सच्चाइयों में सामाजिक, आर्थिक और संज्ञानात्मक भिन्नताओं के अलावा पाठ्यवस्तु को लागू करने और मूल्यांकन से जुड़े मुद्दे भी शामिल हैं। इसके अलावा पाठ्यक्रम नियोजन के कई चरण होते हैं, जिसमें पहला है यह तय करना कि कौन-सी विषय वस्तु पढ़ाई जाएगी। इसके बाद यह तय किया जा सकता है कि आप बच्चों में कौन-सी क्षमताएं विकसित करने की उम्मीद रखते हैं। इसके अंतर्गत किसी भी विशिष्ट गणितीय अवधारणा सिखाने की योजना बनाना आवश्यक है। इससे हमें बच्चों के साथ अपने कामकाज को व्यवस्थित करने में मदद मिलती है, जिससे उन्हें सीखने में बढ़ावा मिलता है। ऐसा करने से हमें इस बात पर भी गौर करने का मौका मिलता है कि हम क्या कर रहे हैं। इससे आम तौर पर हमारी सिखाने की क्षमता बेहतर हो जाती है।

गणित में सीखने की योजना बनाने का तरीका ये है कि शिक्षक खुद पहले इसको पढ़ लें और फिर गणित सीखने सिद्धांतों के मुताबिक हर पाठ की योजना ध्यान से बनाएं। इसके लिए जरूरी होगा कि शिक्षक सावधानी से हर पाठ को देखकर ऐसी योजना बनाए जिसके मुताबिक :-

(i) पढ़ाने का क्रम बच्चों के विकास स्तर से मेल खाता हो —

मिसाल के तौर पर ज्यादातर पाठ्य-पुस्तकों के हिसाब से जोड़-घटा जैसी क्रियाएं सिखाने से पहले बच्चों को 1 से 100 तक की संख्याएँ ~~सिखानी~~ चाहिए। इसमें हो सकता है कुछ बच्चों को संख्याओं के नाम याद होने से पहले ही जोड़-घटाव आते हों। फिर भी इनमें गिनती के अभ्यास का भी एक बढ़िया संदर्भ बनता है।

P.T.O

Scanned with CamScan

(ii) बच्चों को सीखने के ऐसे मौके मिले जिनके जरिये वे गणितीय अवधारणाओं की अपनी समझ बना सकें। जैसा कि कक्षा 1 के बच्चों को ऐसे इबारती सवाल दिए जा सकते हैं। जिनका जवाब देने के लिए उन्हें जोड़, घटाव और गुणा, भाग का उपयोग करना पड़े। इससे बच्चों को अपनी समझ बनाने के बहुत मौके मिलते हैं।

(iii) बच्चे जो कुछ पहले से जानते हैं उसे आधार मानकर आगे बढ़ा जाए। उदाहरण के लिए बच्चे ठोस रूप में भिन्न संख्याएँ कुछ हद तक समझते हैं, हालांकि हो सकता है कि प्रतीकों के रूप में भिन्नों से उनका पाला न पड़ा हो, तब भिन्न सिखाने के लिए उनकी इस समझ का इस्तेमाल किया जा सकता है।

(iv) किसी गणितीय अवधारणा को लिखित रूप में सिखने से पहले और सीखने के दौरान बच्चों को उसके बारे में बोलने के मौके मिले। लिखित रूप से सम्बन्ध जोड़ने से पहले बच्चों को मौका मिलना चाहिए कि वे गणितीय अवधारणाओं को मौखिक व ठोस रूप में समझ सकें। इससे उसकी गणितीय समझ बेहतर होगी और वे सूत्रों को आखें मूंद कर लागू करने से बच जाएंगे।

इस बातों से निष्कर्ष यह निकलता है कि हमें शिक्षा कुछ इस तरह बनानी होगी कि बच्चों की गणितीय सोच व कौशलों को विकसित करने में मदद कर सकें। इसके लिए उन्हें सीखने के ठोस अनुभवों की जरूरत है, न कि प्रतीकों के साथ ज्यादा माथापच्ची करने की। इसका मतलब है कि सिर्फ पाठ्य-पुस्तक पर निर्भर रहने से काम नहीं चलेगा।

END

Scanned with CamScanner